# बिहार कौशल विकास मिशन के सहयोग से औषधीय एवं सगंधीय पौधों तथा पान की खेती पर डोमेन स्किलिंग प्रशिक्षण

**प्रशिक्षण अवधि : 390 घंटे** | **तिथि : 20 फरवरी , 2026**

**मो० : 7091855455, 9236577591**

## औषधीय एवं सगंधीय पौधों की खेती क्यों?

- भारत आयुर्वेद, सिद्ध, यूनानी और हर्बल चिकित्सा का केंद्र रहा है एवं वैश्विक स्तर पर औषधीय एवं सगंधीय पौधों की मांग लगातार बढ़ रही है।
- औषधीय एवं सगंधीय फसलें कम लागत में अन्य फसलो की तुलना में अधिक लाभ देती हैं।
- ये फसलें सीमांत, वर्षा आधारित एवं बंजर/कम उपजाऊ भूमि के लिए उपयुक्त हैं।
- औषधीय एवं सगंधीय पौधों की खेती से ग्रामीण इलाकों में विभिन्न प्रकार का रोजगार सृजन किया जा सकता है।
- गुणवत्ता मानको एवं सरकारी योजनाओं की जानकारी से मिलती है।

## किसान क्यों पंजीकरण करें?

औषधीय पौधों से सही लाभ लेने के लिए उनका प्रशिक्षण बहुत जरूरी है, क्योंकि—

- **सही पहचान के लिए** – कई औषधीय पौधे एक जैसे दिखते हैं। गलत पहचान से नुकसान हो सकता है।
- **उन्नत खेती तकनीक** – बीज चयन, नर्सरी, रोपाई, खाद-सिंचाई, जैविक खेती आदि का सही ज्ञान मिलता है।
- **रोग-कीट प्रबंधन** – पौधों को रोगों से बचाने के सुरक्षित व जैविक उपाय सीखने के लिए।
- **औषधीय गुणवत्ता बनाए रखने हेतु** – सही समय पर कटाई, सुखाना (drying) और भंडारण जरूरी होता है।
- **आर्थिक लाभ बढ़ाने के लिए** – कम लागत में अधिक उत्पादन और बेहतर बाजार मूल्य मिलता है।
- **प्रसंस्करण व मूल्य संवर्धन** – चूर्ण, तेल, अर्क आदि बनाने का प्रशिक्षण आय बढ़ाता है।
- **बाजार व विपणन जानकारी** – सरकारी योजनाएँ, खरीदार, MSP/कॉन्ट्रैक्ट फार्मिंग की जानकारी मिलती है।
- **औषधीय पौधों का संरक्षण** – दुर्लभ प्रजातियों का संरक्षण और सतत उपयोग सीखने के लिए।

**पंजीकरण प्रथम आगमन–प्रथम वरीयता के आधार पर होगा।**

Registration Link : https://docs.google.com/forms/d/e/1FAIpQLSfkPiwituD2goSz_EYvDpA1ae5OtRTHklb2saofhQzvSjT41w/viewform?usp=dialog

**आयोजक:**

**स्नातकोत्तर कृषि महाविद्यालय**
**डॉ. राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय, पूसा, समस्तीपुर, बिहार**
**(राष्ट्रीय महत्व का संस्थान)**